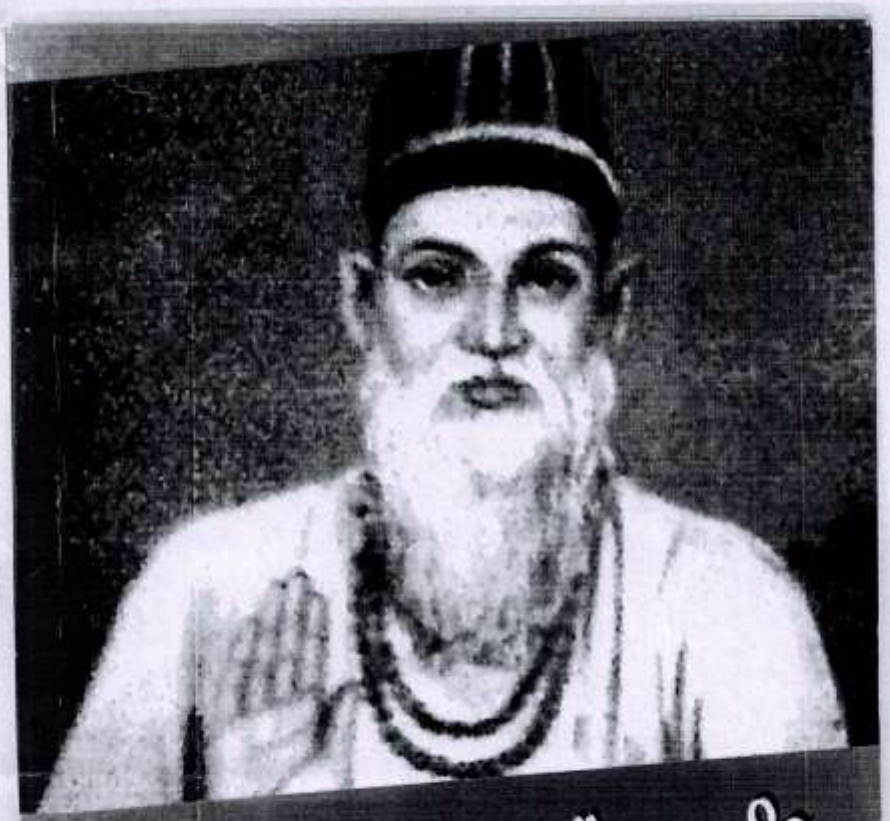

संत काव्य परंपरा और कबीर

डॉ. भारती रावत

© Dr. Bharati C. Ravat

पुस्तक के किसी भी भाग या समुचित पुस्तक का किसी अन्य स्वरूपमे इस्तेमा करने या फोटो कॉपी करने से पहले लेखक की पूर्व सम्मति लेना आवश्यक है। वर्ना ३ कॉपी राइट एक्ट का उल्लंघन माना जाएगा और ये कानूनी तौर पर अपराध है।

ISBN 978-93-86366-26-9

प्रकाशन वर्ष
जनवरी , २०१७

टाइप & सेटींग
भरत बी. पटेल
एक्सेलेंस कोम्पुटर सेन्टर , हिमतनगर

प्रिन्टिंग & बाइंडिंग
भगवती प्रिंटिंग प्रेस, हिमतनगर

प्रकाशक
ग्रीन फ्लेग फाउंडेशन
सोनासण, जिल्ला :साबरकांठा , गुजरात राज्य , पिन,३८३२१०

एक प्रत का मुल्य: 250/- रु.

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पाना.नं.
1	मध्यकालीन हिन्दी संत काव्य की पृष्ठभूमि	1-18
2	संत शब्द की व्युत्पत्ति	19-38
3	निर्गुण भक्ति परंपरा	39-40
4	संत काव्य पर विविध धर्मो का प्रभाव	41-65
5	संत परंपरा	66-89
6	संत परंपरा में कबीर का स्थान	90-98
•	संदर्भ ग्रंथ सूचि	99-103

नुक्रमणिका

षय	पाना.नं.
संत काव्य की पृष्ठभूमि	1-18
ते	19-38
ा	39-40
ध धर्मों का प्रभाव	41-65
	66-89
ार का स्थान	90-98
	99-103

१

मध्यकालीन हिन्दी संत काव्य की पृष्ठभूमि

(१३७५ से १७०० तक)

हिन्दी साहित्य के इतिहास को विद्वानों ने चार कालों में विभाजित किया है । आदिकाल में वीररस की प्रधानता थी इसका समय संवत् १०५० से १३७५ तक है । इसके बाद मध्यकाल आता है । हिन्दी साहित्य में मध्यकालीन हिन्दी काव्य को दो चरण में विभाजन किया है । पूर्व मध्यकाल अथवा भक्तिकाल दूसरा उत्तर मध्यकाल अथवा रीतिकाल जिसका समय सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नसवीं शती के मध्यतक माना जाता है ।

"भक्ति आंदोलन रुढिवादी, सामाजिक तथा धार्मिक विचारों के विरुद्ध हृदय की प्रतिक्रिया तथा भावों का उद्‌गार है ।" डॉ.ए.एल.श्री वास्तव लिखते हैं कि "सल्तन युग में हिन्दुओं में अनेक ऐसे धार्मिक विचारक हुए जिन्होंने भक्ति को अधिक महत्त्व दिया और धर्म सुधारक का एक नया आन्दोलन प्रारम्भ किया जो भक्ति आंदोलन के नाम से विख्य हुआ ।"[1]

भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत के रामानुजाचार्य और उनके